था।

(1) औपनिवेशिक शोषण की यह शुरुआत स्थानीय प्रतिक्रियाओं को जन्म दे। ऐसा इसलिये कि औपनिवेशिक रचना इतनी सुदृढ़ नहीं थी कि वह इन चुनौतियों को दृढ़तापूर्वक झेल सके। औपनिवेशिक शोषण के हर हालत मे बनाये रखना था तब प्रतिक्रिया अवश्यंभावी थी। ऐसी

ताकि किसी तरह की कोई स्थानीय चुनौती उभरती भी है तो उसे आसानी से निबटा जा सके। इन दो तरह की आवश्यकताओ के कारण उपनिवेशवाद को

औपनिवेशिक शोषण के पहले चरण (32)
मे दो अलग-अलग नीतियो को
परिभाषित करना पड़ता है, इन्हें उपनिवेशवाद
की सामाजिक नीति भी कहते है:

1. शानदार पृथकतावाद की नीति
(The policy of Splendid Isolation)

2. प्राच्यवाद की नीति
The policy of orientalism

शानदार पृथकतावाद की नीति,
इसलिये क्योकि उपनिवेशवाद इस तथ्य को
स्थापित करना चाहता था कि शासन के
स्वरूप मे होनेवाला परिवर्तन व लोगो
की जीवनशैली और स्थानीय सामाजिक व्यवस्था
को बदलनेका प्रयास नहीं है, अर्थात यह मिथक स्थापित करने
की कोशिश की गई थी कि एक राजनैतिक
सत्ता के रूप मे E.I.C की स्थापना का
अर्थ लोगो के निरंतर सामाजिक प्रतिक्रिया को
उसी रूप मे बनाये रखना है